डी एम मिश्र

सुल्तानपुर

मच्छर हो या जोंक हो, या कि भ्रष्ट सरकार
खून चूसने के लिए, हैं तीनों तैयार।

क्या दुर्लभ संयोग है, हुआ कोढ़ में खाज
जनता झूठ पसंद है,राजा जुमलेबाज ।

सारा भेद वो जानता , सारा सिक्रेट प्लान
राजा की अटकी हुई, जिस तोते में जान।

राजा के ही ठाट हैं, बदले नित्य जहाज
दाने - दाने के लिए, प्रजा मगर मुंहताज।

पट्टी बाँधे आंख पर, बैठी है सरकार
युवक करोड़ों देश में, घूम रहे बेकार ।

अंधभक्त को छोड़कर, सब तुझसे नाराज़
कौए भी अब खिन्न हैं, तुझसे पक्षीराज।

लाख पालतू है मगर, याद रहे श्रीमान
कौरा पाते डोलता , कुत्ते का ईमान।

लोग समझते क्यों नहीं, बात बहुत संगीन
सब जानें, सब झूठ है, फिर भी करें यकीन

बिल्कुल भी हिचका नहीं, तनिक न किया विचार
तपता सूरज रख गया, कोंपल पर अंगार।

गैरों से कैसे कहूँ, यह है घर की बात
अपनों ने मुझको दिया, पीड़ा की सौगात

अशोक आनन

शाजापुर, मध्य प्रदेश

रंग पलाशी डालकर ; फागुन खेले फाग ।
रंग लगाते आज फ़िर ; मेरे मन में आग ।

लगा गया फ़िर गाल से ; मौसम रंग - गुलाल ।
मुखड़ा अपना देखकर ; हुई शरम से लाल ।

चुनर गुलाबी रंग से ; भीगी चोली संग ।
पायल छम - छम नाचती ; फागुन में पी भंग ।

गयी लौटकर आँख से ; सपनों की बारात ।
रही बिलखती रात भर ; डोली मेरे साथ ।

रूठी बैरन आँख से ; बरसों से ये नींद ।
तितली - पंखी स्वप्न की ; जिससे थी उम्मीद ।

रंगों के ख़त बाँटता ; आया फागुन द्वार ।
प्रेम - रंग का ख़त दिया ; उसने अबकी बार ।

बादल रंग - गुलाल के ; उड़े गगन में आज ।
कोई भींगा रंग में ; गिरी किसी पर गाज ।

कानों में रस घोलते ; फागुन के अब गीत ।
होंठ चूमकर प्यार से ; निभा गये जो प्रीत ।

फागुन केसर - ताल में ; डुबो गया ये देह ।
साँसें महकीं गंध से ; मिला पिया का नेह ।

उतरी डोली फूल की ; ख़ुशबू को ले संग ।
तितली - भंवरे छेड़कर ; करें सुबह से तंग